# नींद के बाहर: उपभोक्ता संस्कृति का प्रामाणिक दस्तावेज

डॉ. तुपे सरला सूर्यभान
सहायक प्राध्यापक,
पद्मश्री विखे पाटील कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, प्रवरानगर
ई-मेल –sarlatupe1984@gmail.com
दूरभाष नं. 9763950400

शोधसारांश :

उपभोक्ता वर्ग आधुनिक समाज की सच्चाई के रूप में सामने आता है- जहाँ सुविधा, प्रदर्शन और बाज़ार तो है, पर स्थायी सुख और मानवीय संतोष का अभाव है। धीरेंद्र अस्थाना इस वर्ग की आलोचना करते हुए पाठक को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करते हैं। आधुनिक समाज में उपभोक्ता वर्ग का उदय एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का संकेत है। उपभोक्ता वर्ग वह सामाजिक समूह है जो वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग को जीवन का केंद्र मानता है। इस वर्ग की पहचान केवल आवश्यकताओं की पूर्ति से नहीं, बल्कि सुविधाओं, सुख-साधनों और विलासिता के उपयोग से होने लगी है। वैश्वीकरण, उदारीकरण और तकनीकी विकास ने उपभोक्ता वर्ग को तेजी से बढ़ाया है। बाजार में वस्तुओं की भरमार, आकर्षक विज्ञापन ने लोगों को अधिक खरीदने के लिए प्रेरित किया है। आज व्यक्ति अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और पहचान को ब्रांड, मोबाइल, वाहन और जीवन-शैली से जोड़कर देखने लगा है। धीरेंद्र अस्थाना की यह कहानी बाजारवाद और मानवीय मूल्यों तथा नैतिकता का पतन जैसे गंभीर मुद्दों पर प्रकाश डालती हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति में भौतिक वस्तुओं, सेवाओं का उपभोग जीवन का मुख्य लक्ष्य बन जाता है। व्यक्ति की पैसे कमाने की होड़ मानवीय रिश्तों को कमजोर बनाती हैं। धीरेंद्र अस्थाना का साहित्य उपभोक्ता संस्कृति के परिवेश में समकालीन जीवन की विसंगतियाँ, असंवेदनशीलता, शहरी मध्यमवर्गीय समाज की मानसिक एवं भावात्मक स्थितियाँआदि को यथार्थ के धरातल पर प्रभावी रूप से व्यक्त करता है । उनकी कहानियों में उपभोक्ता वर्ग केवल आर्थिक इकाई नहीं, बल्कि एक मानसिक और सांस्कृतिक स्थिति के रूप में उभरता है। उपभोक्ता वर्ग की सबसे बड़ी विशेषता है - दिखावे और सुविधाओं के माध्यम से पहचान बनाना। धीरेंद्र अस्थाना के पात्र अक्सर इसी मानसिकता से ग्रस्त दिखाई देते हैं। वे आधुनिक जीवन की चमक-दमक, नौकरी, शहरी जीवन और उपभोग की वस्तुओं में उलझे रहते हैं, पर भीतर से असंतुष्ट और अकेले होते हैं।

*बीजशब्द :*

*भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, उदारीकरण, आधुनिकतावाद, वर्तमान युग, उत्तर-आधुनिकतावाद, उपभोक्तावाद*

वर्तमान युग भूमंडलीकरण का युग है। भूमंडलीकरण और साहित्य का गहरा संबंध है। साहित्य में भूमंडलीकारण का ज्यादा प्रभाव होने के कारण उपभोक्तावाद, मीडिया, सांस्कृतिक बदलाव जैसे विषयों को प्रमुखता मिली है। इन विषयों का आधार लेकर साहित्यकार आधुनिक जीवन की जटिलताओं को दर्शाते हुए नई प्रवृत्तियों और विषयों को सामने ला रहे हैं। साहित्य की इस गतिशील प्रक्रिया में एक नई विचारधारा पनप रही है, जिसे आज उत्तर आधुनिकतावाद कहा जाता है। इसमें समाज या हम समय के जिस कठिन दौर से गुजर रहे हैं, उसमें हम भविष्य के लिए आशावादी तो हैं, परंतु आशंकित भी हैं, भयभीत भी हैं और त्रस्त भी हैं। इन सभी बातों को साहित्य के माध्यम से पाठकों के सम्मुख रखना जोखिम भरा काम होता है। धीरेंद्र अस्थाना इस जोखिम को उठाते हैं। इसीलिए वे अपनी कहानियों में बदलते हुए नए सामाजिक तस्वीर को पाठकों के सम्मुख रखते हैं। उनकी कहानियों में आर्थिक बोझ से दबे हुए व्यक्ति की त्रासदी, पीड़ा, आकुलता और जीवन की जटीलता के दर्शन मुखरित होते हैं। उनकी कहानियों की कथा व्यक्ति मात्र की कथा न होकर उपभोक्ता समाज के मध्यमवर्गीय पात्रों की व्यथा है। उनकी 'नींद के बाहर' यह रचना आधुनिक परिवेश में अभावग्रस्तता की मानसिक कचोट में जीवन यापन कर रहे मनुष्य की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करती है। विफल

महत्वाकांक्षा से पीड़ित इस कहानी के पात्र उपभोक्ता समाज की मोहकता की चपेट में आकर मानसिक यंत्रणाओं के शिकार हुए हैं। उत्तर आधुनिकतावाद एक ही साथ आधुनिकतावाद का विकास भी है और उसका विलोम भी। "चूँकि उत्तर आधुनिकता एक आर्थिक, संस्कृतिक अवस्था है, इसलिए वह 'स्वायत्त' क्षेत्र नहीं बचता जहाँसे कोई गैर उत्तर आधुनिकता विमर्श कर सके।"1वास्तविक रूप से उत्तर आधुनिकतावाद ने मनुष्य को केंद्र में रखा,लेकिन मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधाओं को महत्व दिया। समाज में भौतिक विकास चरम सिमा पर पहुँचा, मानवता दुय्यम स्थान पर ही रही। यही बाते साहित्यकार साहित्य के माध्यम से समाज के सामने रखने की कोशिश करते हैं। उत्तर आधुनिकतावाद में कहानी अक्सर अनसुलझी समस्याओं और अनिश्चितताओं के साथ समाप्त हो जाती है। यह पाठक को अपने निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए छोड़ देता है। कहानी में उत्तर आधुनिकतावाद का अर्थ है कि अब कोई एक 'सत्य' या 'तर्क' नहीं है, बल्कि वास्तविकता को देखने के कई तरिके हैं, जो कहानी कहने की पद्धति को बदल देते हैं। यह पारंपारिक, रैखिक कहानी कहने के बजाय विखंडन, विडंबना और अंतहीन, संभावनाओं का उपयोग करता है, और अक्सर एक खुला अंत छोड देता है, जिससे पाठक खुद ही अर्थ बना सके।

नई विचार धारा ने व्यक्ति को स्वार्थी तथा लोभी बना दिया साथ ही पूंजी की सर्वोच्चता के कारण व्यक्ति आत्मकेंद्रित तथा निजी सफलता का इतना अधिक पक्षधर होता गया कि उसने व्यक्ति को सामाजिक तथा नैतिक पतन की ओर पहुँचा दिया। इस प्रकार के पतन का सही अर्थ तब समझ में आता है, जब धीरेंद्र अस्थाना द्वारा लिखित 'नींद के बाहर' लंबी कहानी में धनराज नामक व्यक्ति का चरित्र-चित्रण पढ़ते हैं। कहानी का मुख्य पात्र धनराज के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन पर प्रकाश डाला है। कहानी की शुरूआत ही नाटकीय ढंग से होती है। धनराज जब नींद से यथार्थ में आता है तब असली जीवन से परिचित होता है। 'सम्राट' नामक कंपनी के डुबने के साथ ही कथानायक धनराज की नौकरी, कार और सेलफोन छिन जाता है। धनराज की नींद के बाहर की दुनिया एक गुब्बारे की तरह थी। गुब्बारे के फुटते ही धनराज सामान्य जीवन से परिचित हो जाता है। इस सामान्य जीवन में दंगे, बलात्कार, झगडे, आत्महत्याएँ तो थी ही साथ-साथ पारिवारीक रिश्ते-नाते भी नायक को अजगर की भाँती निगलने के लिए तैयार थे। इसी के साथ यह कहानी गहरी सामाजिक पर्तों को खोलती है। जब तक धनराज सम्राट समूह में नौकरी कर रहा था तब तक समाज तथा परिवार में क्या चल रहा है इससे उसे कोई लेना-देना नहीं था। सम्राट समूह से बाहर पड़ते ही धनराज वास्तविकता से वाकिफ होता है, समाज तथा परिवार की चिंता में घिर जाता है और जीवन की इसी उलझन में एक दिन अचानक गायब हो जाता है।

'नींद के बाहर' कहानी में कहानी का नायक धनराज चौधरी 'सम्राट समूह' में मीडिया डारेक्टर के पद पर दस वर्ष तक रहा। अचानक उसे निकाल दिया जाता है, धनराज अपने करियर के अंत के संकेतों का सामना करता है। छह दिसंबर को, आठ साल बाद बाबरी मस्जिद के ढहने की याद में, उसे वीआरएस (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना) का चेक दिया जाता है, जबकि उसके पास रिटायरमेंट के लिए अभी पंद्रह साल बाकी हैं। धनराज की दुनिया में ग्लोबलाइजेशन और तकनीकी प्रगति के कारण बड़े बदलाव हो रहे हैं। वह अपने सहायक कैशियर से जानता है कि कंपनी में चालीस लोग निकाले जा चुके हैं और और भी लोग जाएंगे। जब वह अपने केबिन का मुआयना करता है, तो उसे एक खालीपन महसूस होता है। बाहर की दुनिया में सब कुछ सामान्य चल रहा है, लोग अपने काम में व्यस्त हैं, जबकि धनराज सड़क पर टैक्सी का इंतजार कर रहा है। उसकी जिंदगी में एक बड़ा बदलाव आ चुका है, और वह अपने भविष्य के बारे में सोचने पर मजबूर है।धनराज को समाज, व्यक्ति, परिवार, संवेदना की समझ तब आती है जब उसे उपभोक्तावादीसमाज 'इस्तमाल करे और फेक दो' जैसे फेंक देता है। पूरी तरह से भौतिकतावाद में डूबे धनराज को जो वास्तविकता दिखाई देती है उससे पता चलता है कि वह किसी और दुनिया में था जो निश्चित रूप से भ्रम की दुनिया है और प्रतिष्ठा का दिखावा करती है। उसे महसूस होता है कि "निष्कपट जीवन नींद के बाहर ही है धनराज, धनराज ने सोचा। तुमने व्यर्थ ही अपना जीवन यों सुखा डाला। पैसे कमाने के बजाय अगर तुमने रिश्ते कमाए होते, तो जीवन का रंग आज कुछ और ही होता। और पैसे भी क्या कमाए? एक छोटा-सा फ्लैट, जरा-सा बैंक बॅलेंस और वह भी अपनी नींद बेचकर? मां जैसे दुनिया के सबसे कीमती रिश्ते की अकारण नाराजगी मोल लेकर।"2 लेखक ने धनराज के माध्यम से पाठकों को यथार्थ से परिचित कराया है।

उत्तर आधुनिकतावाद में जो पीढी सामने आयी उसे किसी भी आत्मदया से कोई सरोकार नही है उसकी ढेर सारी महत्वाकांक्षाए है, वह परिवार, परंपरा स्मृतियों से बिल्कुल मुक्त है उसके सामने केवल वर्तमान है, भविष्य से उसका कोई लेना-देना नही। नए समाज में यह मूल रूप से उपभोक्तावादी पीढ़ी है जिसका सरोकार देश भक्ति से खत्म हो चुका है और मूल्यों का कोई अर्थ नही है। जितना कमाना उससे ज्यादा खर्च करना इस पीढ़ी का उद्देश है। दूसरे उत्तर आधुनिक समाज में विचारधारा का अंत, इतिहास का अंत, मनुष्यता का अंत आदि की तमाम घोषणा ने समाज को विखंडीत करना शुरू कर दिया। ढेर सारी तकनीकी उपलब्धियों के बावजूद व्यक्ति असंवेदनशील, ढेर सारी सुविधाओं के बावजूद बिल्कुल अकेला और असहाय हो गया। कहानी में लेखक ने धनराज के बेटे रोहित के माध्यम से आधुनिक युवा वर्ग के जीवन, सोच और व्यवहार में हो रहे परिवर्तन को चित्रित किया है। धनराज रोहित की 'वेब मीडिया' में चल रही नौकरी के बारे में जानना चाहता है। तब रोहित धनराज को अमेरिकी कंपनी में प्रोबेशन पर जाने की बात बताता है। रोहित की इस प्रकार से नौकरी बदलने की आदत पर धनराज चिंतित होता है। धनराज के चिंतित होने पर रोहित समझाता है, "नौकरी नहीं पापा, जॉब...जॉब।' रोहित खिलखिलाने लगा,'हमारी जनरेशन एक जगह बंधकर नहीं रहती आप लोगों की तरह... जहां ज्यादा पगार वहीं पर काम।"3 ये वर्ग उपभोग, और पहचनके चुनाव में पूर्ण स्वतंत्रता चाहता है, जिससे उपभोक्तावाद बढ़ता है। धनराज रोहित को पैसे सोच-समझकर खर्च करने के लिए कहता है तो इस पर रोहित पैसे कमाने और खर्च करने में यकीन रखता है। रोहित के माध्यम से लेखक स्थायी नौकरी की जगह मल्टी-स्किलिंग, फ्रीलांसिंग और स्टार्ट-अप संस्कृति केप्रभाव की ओर संकेत करते हैं।

धनराज के माध्यम से लेखक ने नींद के बाहर पड़े हुए लोगों को प्रवेश वर्जित कहा हैं। नौकरी के छुटते ही धनराज अपने दोस्तों को कॉल करता है तो हर कोई मीटिंग में बिजी होता है। यही दुनिया का दस्तुर है जहाँ दोस्त नहीं कारोबार चलता है। उत्तर आधुनिकतावाद में मित्रता की परिभाषा तोबदली ही है, लेकीन आज भी लडकी तथा महिलाए यौन हिंसाचार का शिकार होती हुई दिखाई देती है। 'नींद के बाहर' कहानी में बारहवींमें पढ़नेवाली सकीना नामक लड़की का चुहों को मारनेवाला जहर 'रैटोल' खाकर आत्महत्या करने का जिक्र है, जिसे कॉलेज के कुछ गुंडे लडकों का गैंग परेशान कर रहा था। सकीना के ही जात के उन गुंडे लड़को ने उसकी इज्जत लुटी थी।

6 दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद का विध्वंस भारत के सामाजिक - राजनीतिक परिदृश्य में एक निर्णायक क्षण था, जिसनेव्यापक दंगो को जन्म दिया और लगभग दो हजार लोंगों की जान चली गई। एक महत्वपूर्ण हिंदू तीर्थस्थल आयोध्या में स्थित इस मस्जिद का निर्माण 1528 में हुआ था, और यह भारत के मुस्लिम समुदाय के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। उनकी ही मस्जिद गिराकर उन्हीं लोगों को मारा-काटा जा रहा था। लेखक साजिद के माध्यम से पाठकों के सामने इन दंगों के आधार पर सवाल उपस्थित करते हैं "हमारी ही मस्जिद गिरा दी और हमको ही मारा-काटा जा रहा है। यह लोकतंत्र है या दादागिरी?"4 कहानी पढ़ते वक्त ऐसा लगता है जैसे हम उसी दहशत भरे समय से गुजर रहे है, दंगो के दिन रोहित अपनेही मुस्लिम दोस्त के मालवणी घर में अटक गया था, तब सरिता गली गुंडे लडकों को चंदा देकर अपने बेटे को सहीसलामत छुडवाकर लाती है। उसी रात डॉक्टर दंपत्ति धनराज के घर आए थे वे अपने घरसहीसलामत पहुँच जाते है। धनराज की कॉलनी में रहने वाली नजमा नामक टिचर अपने जले हुए घर की दुर्दशा देखने आती है, बस्ती के कुछ आवारा लड़के पकड़ कर उसकी इज्जत लुटते है। लकी ड्रायक्लीनर का मालिक अनवर अपनी पत्नी और दो बच्चों सहित जला दिया जाता है ।

व्यक्ती जब भौतिक वस्तूओं को जुटाने के पीछे भागने लगता है तब अपने परिवार रिश्तों को पैरोतले कुचलकर सीडिया चढ़ता है इसी बात को लेखक ने धनराज के माध्यम से यथार्थ रूप से पाठकों के सामने रखा है। धनराज जब धनराज समूह मीडिया का डायरेक्टर था तब तक उसे अपने भाई- बहन, मां की याद नही रही। राकेश चौधरी जो रेफ्रिजरेटर मेकॅनिक हे केवल 3800 रुपयेकी नोकरी में अपने बीवी बच्चों के साथ मां भाई और बहन को संभालता है। राकेश चौधरी धनराज से पाँच बरस छोटा भाई होकर भी धनराज से बड़ा दिखता है। माँ के कहने परदस बरस बाद धनराज के घर आता है अपनी बहन की शादी मे धनराज को अपने कर्तव्य को याद दिलाने के लिए। उस वक्त धनराज को अचानक याद आती है उसकी छोटी बहनजो अभी 24 साल की हुई, बबलू नामक छोटा भाई जिसे धनराज मुंबई में सेटल हो जाने के बाद लेकर आनेवाला था। धनराज की राह देखते देखते बबलू उर्फ नागेश चौधरी गुंडा बन गया था।

धनराज अपने आपको सम्राट समूह में प्रमाणित करना चाहता था लेकिन खुद को प्रमाणित करते करते परिवार के रिश्तों से ही दूर होता गया। धनराज के माध्यम से लेखक ने पारिवारिक रिश्तों को तो पाठकों के संमुख रखा ही हे लेकिन सामाजिक पर्तों को भी बखूबी खोला है। धनराज गोल्डन नेस्ट नामक कॉलनी मे रहता था यह कॉलनी आधुनिकता की दृष्टी से परिपूर्ण थी। पुरी कॉलनी पांच सेक्टर में बटी थी इसी के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन की दास्तानलेखक ने पाठकों के सामने रखी है। जैसे रतन केडिया जो स्त्रियों के अंडरगारमेंट्स बेचने वाली कंपनी का सेल्समन है। विदेशी ब्रँड का ज्यादा प्रचलन होने के कारण इसे लोकल कंपनी नोकरी से निकलती है। अपोलो टायर में काम करनेवाला हिमांशू उसकी नोकरी छुट गई और वह गाव जाने की सोच रहा था लेकिन गाव भी कौन से आबाद है वहाँ भी भीषण सुखे के कारण ग्रामीण इलाकों की स्थिती विकट है। उत्तर आधुनिकता के दौर में ग्रामीण स्थिती एक जटिल बदलाव से गुजर रही है। जहाँ एक तरफ भूमंडलीकरण की बात हो रही है, दुसरी तरफ शहरीकरण के प्रभाव से पारंपारिक जीवनशैली रिश्ते और मूल्य टूट रहे है, जिससे युवा पलायन कर रहे है। ग्रामीण संस्कृती के पुनर्मूल्यांकन मे तणाव और संभावनाए दोनों मौजूद है। लेखक ने महानगर के उपभोक्तावादी वर्ग के साथ साथ सेक्टर एक के माध्यम से बुजुर्गवर्ग की व्यथा को भी उकेरा है मुंबई मे जगह की कमी होने के कारण ये वर्ग अपना पूरा दिन स्टेशन पर वडापाव खाकर बिताते हैं। लेखक ने बुजुर्ग के साथ साथ स्टेशन पर गाने वाले लोग तथा भिकारी इनकी भी त्रासदी पाठकों के सन्मुख रखी है।

आज की युवा वर्ग के लिए मुंबई मायाजाल के रूप मे दिखाई देती है फिल्म इंडस्ट्री के आकर्षण से कहानी में चित्रित महमूद अयूबी जैसे कोई लोग आते हैं। "वह मुंबई में प्राण या प्रेम चोपडा या फिर अमजद खान बनने आया था, लेकिन निर्माताओं ने उसे मौका ही नहीं दिया।"5 ऐसे में अयूबी जैसे लोग असली जीवन में अपना सपना पुरा करते है। एक तरफ आकर्षित करने वाली मुंबई की सच्चाई यही है कि, दुसरी तरफ झुग्गी, झोपडपट्टीयों बढ़ती संख्या ने लोगों की जिंदगी नरक बना दी है। मुंबई की इसी चकाचौंध को देखकर लड़किया श्रीदेवी और रेखा बनने के सपने लेकर मुंबई आती है, और बार में नाचने लगती है बार में से लोटस पहुंचती है,"लोटस में नाचते-नाचते वे दुबई पहुंच जाती थीं-शेखों के दरबार में। पांच–सात साल दुबई में गुजारकर वे वापस मुंबई लौटती थीं– ढेर सारे हीरे-जवाहरात, मोटे बैंक बैलेंस, निचुडे हुए सीनों और गंभीर बीमारियों के साथ।"6 मुंबई के डान्सबार का यथार्थ लेखक ने सपना सारस्वत के माध्यम से पाठकों के सामने रखा है, जिसे पढ़कर ऐसा लगता हैं, कि हम मुंबई की बस्तीयों में ही घूम रहे हैं। "बीसवीं सदी के उत्तरार्ध की कोख से पैदा हुआ उत्तर आधुनिक समय हंस रहा था। शहर के अखबार और बाजार डॉट कॉम कंपनियों के विज्ञापनों से अटे पड़े थे। जुहू की गलियों में चोरी-छिपे चलनेवाला देह व्यापार का धंधा पिछड़ रहा था। महंगे और बड़े कॉलेजों की बिंदास किशोरियां चिपकी हुई जींस और टॉप के साथ कॉलेजों से बाहर निकलकर केवल एक रात के डिस्को जीवन और डिनर विद बीयर के सौदेपर लेन-देन कर रही थीं। इंटरनेट पर पोर्नो साईट सबसे ज़्यादा पैसा पीट रही थीं। पूरी दुनिया की हजारों नंगी लड़कियों को करोड़ों बाप-बेटे कंप्यूटर के मॉनीटर्स पर देखने में मशगूल थे। सरकारें अपने कर्मचारियों को समय पर वेतन नहीं दे पा रही थीं। मल्टीनेशनल कंपनियों का अजगर बाजार को लीलता हुआ घुसा चला आ रहा था। कारें बढ़ती जा रही थीं। हवा और पानी समाप्त हो रहे थे। मुंह में चीज बर्गर या चिकन सैंडविच या मटन रोल दवाए और हाथ में कोक की बोतल थामे युवा लड़के डॉट कॉम कंपनियों में चौदह-चौदह घंटे खप रहे थे। जवान होती लड़कियां अपने उत्तेजक सीनों और कामातुर नितंबों के साथ फिल्म फाइनेंसरों की हथेलियों पर नाच रही थीं। अकेले छूट गए बूढ़े लोगों को उनके फ्लैटों में घुसकर कत्ल किया जा रहा था। बच्चों को क्रंच में फेंक दिया गया था और मांएं लोकल में लटक कर काम पर जा रही थीं।"7 उत्तर आधुनिकता पर प्रकाश डालते हुए लेखक शिक्षा, विज्ञापन, देह व्यापार, इंटरनेट कीपोर्नो साईट, सरकार, मल्टीनॅशनल कंपनी, फिल्म इंडस्ट्री, बुढे, बच्चे, स्त्रिया इन सब पर व्यंग करते हैं। आखिर पाठकों के सम्मुख प्रश्न उपस्थित करते हैं,'आई. व्हाई?','मैं ही क्यू' में इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ने के लिए अभिनेत्री गीता अलूलकर गर्भवती अवस्था में सातवें माले के फ्लैट की खिडकी से छलांग लगाती है, शराबी ऑटो ड्रायव्हर की बीवी शोभा नार्वेकर मिट्टी के तेल से अपने आपको जलाती है, कॉन्स्टेबल सालुंके खुद को गोली मारता है, सतवीर राणा ट्रेन के आगे कुद जाता है, बारहवीं साइंस के स्टुडेंट नासिर हुसैन रेशम टिपणीस के चेहरे पर तेजाब फेंककर भागता है, शूटरों की भर्ती हो रही थी। ऐसी घटनाओं को सुनकर, देखकर यही विचार आता है, कि क्या यही है आधुनिकता, यही है विकास।

निष्कर्ष:-

उक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि उपभोक्तावादी समाज में सामाजिक जीवन कि भूमिका को प्रस्तुत करते हुए साहित्यकार समकालीन समाज की जटिलताओं को दर्शाते हैं। विभिन्न क्षेत्रों के आधार पर समाज की सच्चाई प्रस्तुत करते हैं। पत्र-पत्रिकाएँ बंद हो रही थी, पुस्तकालय सुने पडे थे, विज्ञापन लाखों के पुरस्कार में बट रहें थे,जन-संघर्ष बढ़ रहा था, उसके खिलाप आवाज उठानेवालों को जेल में बंद किया जा रहा था, गुंडे नगर-सेवक बन गए थे, डॉक्टर, व्यापारी, और क्रिकेटर घपलेबाज। इन सब की सच्चाई का लेखा-जोखा लेखक ने कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। 'नींद के बाहर' कहानी में उपभोक्ता वर्ग आधुनिक समाज की सच्चाई के रूप में सामने आता है- जहाँ सुविधा, प्रदर्शन और बाज़ार तो है, पर स्थायी सुख और मानवीय संतोष का अभाव है। लेखक इस वर्ग की आलोचना करते हुए पाठक को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है। अस्थाना की कहानियों में बाज़ार का दबाव मानवीय संबंधों को प्रभावित करता है। रिश्ते उपयोगिता पर आधारित हो जाते हैं और संवेदना का स्थान स्वार्थ ले लेता है। उपभोक्ता वर्ग का व्यक्ति सफलता को केवल आर्थिक उपलब्धियों और सामाजिक प्रदर्शन से मापने लगता है, जिससे उसका आंतरिक जीवन रिक्त होता है। उसी रिक्तता बोध का दस्तावेज धनराज के माध्यम से लेखक ने पठकों के सामने रखा हैं।

संदर्भ सूची : -

1. सुधीश पचौरी, उत्तर-आधुनिक साहित्यिक विमर्श,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – 1996, 2000 , पृष्ठ-07
2. धीरेंद्र अस्थाना, नींद के बाहर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं.– 2002, पृष्ठ-29
3. वही, पृष्ठ-13
4. वही, पृष्ठ-18
5. वही, पृष्ठ-37
6. वही, पृष्ठ-40
7. वही, पृष्ठ-44,45

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.